विषय: समाजशास्त्र (039)
(Q.P. CODE 62)
Marking Scheme –Hindi medium
Strictly Confidential
(For Internal and Restricted use only)
Senior Secondary School Certificate Examination, 2026

सामान्य निर्देश:-

1	सीबीएसई ने 2026 की परीक्षा से कक्षा XII की उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन के लिए ऑन स्क्रीन मार्किंग (ओएसएम) शुरू करने का निर्णय लिया है।
2	आप जानते हैं कि उम्मीदवारों के वास्तविक और सही आकलन में मूल्यांकन सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी सी गलती भी गंभीर समस्याओं को जन्म दे सकती है, जिससे उम्मीदवारों, शिक्षा प्रणाली और शिक्षण पेशे के भविष्य पर गहरा असर पड़ सकता है। गलतियों से बचने के लिए, आपसे अनुरोध है कि मूल्यांकन शुरू करने से पहले, मौके पर किए गए मूल्यांकन के दिशानिर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें।
3	"मूल्यांकन नीति एक गोपनीय नीति है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं, किए गए मूल्यांकन और कई अन्य पहलुओं की गोपनीयता से संबंधित है। किसी भी तरह से इसका सार्वजनिक होना परीक्षा प्रणाली को बाधित कर सकता है और लाखों उम्मीदवारों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इस नीति/दस्तावेज़ को किसी के साथ साझा करना, किसी पत्रिका में प्रकाशित करना और समाचार पत्र/वेबसाइट आदि में छापना बोर्ड के विभिन्न नियमों और आईपीसी के तहत कार्रवाई को आमंत्रित कर सकता है।"
4	मूल्यांकन अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया जाना चाहिए। यह किसी की व्यक्तिगत व्याख्या या अन्य किसी विचार के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। अंकन योजना का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। हालांकि, मूल्यांकन करते समय, नवीनतम जानकारी या ज्ञान पर आधारित और/या नवीन उत्तरों की शुद्धता का अलग से मूल्यांकन किया जा सकता है और उन्हें उचित अंक दिए जा सकते हैं।
5	अंकन योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए अंक दिए गए हैं। ये केवल दिशानिर्देश हैं और पूर्ण उत्तर नहीं हैं। छात्र अपनी अभिव्यक्ति दे सकते हैं और यदि अभिव्यक्ति सही है, तो तदनुसार अंक दिए जाने चाहिए।
6	मुख्य परीक्षक को पहले दिन प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता द्वारा मूल्यांकित की गई पहली पाँच उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करनी चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मूल्यांकन अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया है। यदि कोई भिन्नता पाई जाती है, तो विचार-विमर्श और चर्चा के बाद उसे शून्य कर दिया जाना चाहिए। शेष उत्तर पुस्तिकाएँ, जिनका मूल्यांकन किया जाना है, तभी दी जाएँगी जब यह सुनिश्चित हो जाए कि प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता के अंकन में कोई महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं है।
7	मूल्यांकनकर्ता सही उत्तरों पर (√) चिह्न लगाएंगे। गलत उत्तरों पर 'X' का निशान लगाया जाएगा। मूल्यांकन करते समय मूल्यांकनकर्ता सही (✓) चिह्न नहीं लगाएंगे, जिससे यह आभास होगा कि उत्तर सही है और कोई अंक नहीं दिए जाएंगे। यह मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा की जाने वाली सबसे आम गलती है।

8	यदि किसी प्रश्न के कई भाग हैं, तो कृपया प्रत्येक भाग के लिए OSM पोर्टल में दाईं ओर अंक दें। प्रश्न के विभिन्न भागों के लिए दिए गए अंकों को OSM सिस्टम द्वारा कुल मिलाकर जोड़ा जाएगा।
9	यदि किसी प्रश्न के कोई भाग नहीं हैं, तो OSM पोर्टल में बाईं ओर के हाशिये में अंक दिए जाने चाहिए। इसका सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।
10	किसी त्रुटि के संचयी प्रभाव के लिए कोई अंक नहीं काटे जाएंगे। इसके लिए केवल एक बार ही दंड दिया जाना चाहिए।
11	सम्पूर्ण प्रश्न-पत्र के लिए पूर्ण अंक प्रणाली 80 अंको की है। यदि उत्तर उचित हो तो पूर्ण अंक देने में संकोच न करें।
12	प्रत्येक परीक्षक को अनिवार्य रूप से पूरे कार्य समय यानी प्रतिदिन 8 घंटे मूल्यांकन कार्य करना होगा और मुख्य विषयों में प्रतिदिन 20 उत्तर पुस्तिकाओं और अन्य विषयों में प्रतिदिन 25 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना होगा (विवरण स्पॉट दिशानिर्देशों में दिया गया है)। यह कम किए गए पाठ्यक्रम और प्रश्नपत्र में प्रश्नों की संख्या को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
13	सुनिश्चित करें कि आप परीक्षक द्वारा अतीत में की गई निम्नलिखित सामान्य त्रुटियों को न दोहराएँ: ● उत्तरों को सही चिह्नित करना, लेकिन अंक न देना। (सुनिश्चित करें कि सही निशान स्पष्ट रूप से लगा हो। यह केवल एक रेखा होनी चाहिए। गलत उत्तर के लिए x का निशान भी ऐसा ही होना चाहिए।) उत्तर का आधा या आंशिक भाग सही और शेष गलत चिह्नित करना, लेकिन अंक न देना।
14	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय यदि उत्तर पूरी तरह से गलत पाया जाता है, तो उसे क्रॉस (X) के रूप में चिह्नित किया जाना चाहिए और शून्य (0) अंक दिए जाने चाहिए।
15	वास्तविक मूल्यांकन शुरू करने से पहले परीक्षकों को "मौके पर मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश" में दिए गए दिशा-निर्देशों से स्वयं को परिचित कर लेना चाहिए।
16	निर्धारित प्रोसेसिंग शुल्क का भुगतान करने पर उम्मीदवारों को अनुरोध पर उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी प्राप्त करने का अधिकार है। सभी परीक्षकों/अतिरिक्त मुख्य परीक्षकों/मुख्य परीक्षकों को एक बार फिर याद दिलाया जाता है कि उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि मूल्यांकन अंकन योजना में दिए गए प्रत्येक उत्तर के लिए निर्धारित अंकों के अनुसार ही किया जाए।
17	अगर कोई कैंडिडेट किसी सवाल में दोनों ऑप्शन आज़माता है, जहाँ सिर्फ़ एक ऑप्शन आज़माना ज़रूरी है, तो इवैल्यूएटर दोनों ऑप्शन में मार्क्स देगा। सिस्टम दो में से ज़्यादा वाला स्कोर लेगा और दूसरे जवाब को नज़रअंदाज़ कर देगा।
18	दो विकल्पों वाले प्रश्न में, यदि उम्मीदवार ने केवल एक का प्रयास किया है, तो मूल्यांकनकर्ता उस विकल्प के सामने “एनए” (प्रयास नहीं किया गया) चिह्नित करेगा जिसका उम्मीदवार द्वारा प्रयास नहीं किया गया है।

MARKING SCHEME
Sociology (Subject Code-039)
(PAPER CODE: 62) (P62039)

Q. No.	EXPECTED OUTCOMES/VALUE POINTS	Marks
	MCQs	**1**
1.	(B)	**1**
2.	(A)	**1**
3.	(B)	**1**
4.	(B)	**1**
5.	(C)	**1**
6.	(A)	**1**
7.	(A)	**1**
8.	(D)	**1**
9.	(D)	**1**
10.	(B)	**1**
11.	(B)	**1**
12.	(D)	**1**
13.	(A)	**1**
14.	(A)	**1**
15.	(C)	**1**
16.	(A)	**1**
17.	**खण्ड – ख** "माल्थस ने कहा था कि मनुष्यों की जनसंख्या उस दर की तुलना में अधिक तेज़ी से बढ़ती है जिस दर पर मनुष्य के भरण-पोषण के साधन (विशेष रूप से भोजन, लेकिन कपड़ा और अन्य कृषि-आधारित उत्पाद भी) बढ़ सकते हैं। इसलिए मनुष्य सदा ही गरीबी की हालत में जीने के लिए दंडित किया गया है क्योंकि कृषि उत्पादन की वृद्धि हमेशा ही जनसंख्या की वृद्धि से पीछे रहेगी।" माल्थस ने जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के क्या तरीके सुझाए हैं?	**1+1=2**

Ans.	• **कृत्रिम निरोध** (Preventive Checks) जैसे कि बड़ी उम्र में विवाह करके या यौन संयम रखकर अथवा ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सीमित संख्या में बच्चे पैदा किए जाएँ। • **प्राकृतिक निरोध** (Positive Checks) अकालों और बीमारियों के रूप में जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए अनिवार्य होते हैं।	**1** **1**
18. **Ans.**	(क) सामाजिक भेदभाव आकस्मिक या अनायास रूप से नहीं बल्कि व्यवस्थित तरीके से होता है- यह समाज की संरचनात्मक विशेषताओं का परिणाम है।" उपर्युक्त कथन के संदर्भ में सामाजिक बहिष्कार के अर्थ पर प्रकाश डालिए। • **सामाजिक बहिष्कार** वह तौर-तरीके हैं जिनके ज़रिए किसी व्यक्ति या समूह को समाज में पूरी तरह घुलने-मिलने से रोका जाता है व अलग या पृथक रखा जाता है। **OR** • सामाजिक बहिष्कार व्यक्तियों या समूहों को उस समाज के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में पूर्ण रूप से भाग लेने से रोकता है जिसमें वे रहते हैं। सामाजिक बहिष्कार संरचनात्मक होता है, अर्थात् यह व्यक्तिगत क्रिया के बजाय सामाजिक प्रक्रियाओं और संस्थाओं का परिणाम होता है। (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु) **अथवा** (ख) "अस्पृश्यता जाति-व्यवस्था का एक अत्यंत घृणित एवं दूषित पहलू है।" **Ans.** अस्पृश्यता के किन्हीं दो आयामों पर प्रकाश डालिए। • **बहिष्कार**: दलितों को पेयजल के सामान्य स्रोतों से पानी नहीं लेने दिया जाता, उनके कुएँ, हैंडपंप, घाट आदि अलग होते हैं; वे सामूहिक धार्मिक पूजा-आराधना, सामाजिक समारोहों और त्योहारों-उत्सवों में भाग नहीं ले सकते। • **शोषण:** आर्थिक शोषण तो मानो इस अस्पृश्यता की कुरीति के साथ सदा से ही जुड़ा है। कभी-कभी तो उनकी संपत्ति छीन ली जाती है। • **अनादर एवं अधीनता**: अस्पृश्यता एक अखिल भारतीय प्रघटना है, हालाँकि उसके विशिष्ट रूपों एवं गहनताओं में विभिन्न क्षेत्रों तथा सामाजिक-एतिहासिक संदर्भों में काफ़ी अधिक अंतर होता है। उन्हें आमतौर पर 'बेगार' करनी पड़ती है जिसके लिए उन्हें कोई पैसा नहीं दिया जाता या बहुत कम मज़दूरी दी जाती है। (कोई दो आयाम)	**2** **2** **2** **1** **1** **1** (कोई दो)
19. **Ans.**	"हमारी बहुत सांस्कृतिक रस्मों और उनके प्रकार में कृषि की पृष्ठभूमि होती है। कृषि और संस्कृति के बीच घनिष्ठ संबंध है।" दिए गए कथन का समर्थन करने के लिए एक कारण बताइए तथा कृषि से संबंधित किन्हीं दो त्योहारों के नाम बताइए। • भूमि उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन है। भूमि संपति का एक महत्वपूर्ण प्रकार भी है। लेकिन भूमि न तो केवल उत्पादन का साधन है और न ही केवल संपत्ति का एक प्रकार। न ही केवल कृषि है जो कि उनके जीविका का एक प्रकार है। यह जीने का एक तरीका भी है। हमारी बहुत सी सांस्कृतिक रस्मों और उनके प्रकार में कृषि की पृष्भूमि होती है। • तमिलनाडु में पोंगल, आसाम में बीहू, पंजाब में बैसाखी, कर्नाटक में उगाड़ी ये सब मुख्य रूप से फसल काटने के समय मनाए जाते हैं, और नए कृषि मौसम के आने की घोषणा करते हैं। **(कोई दो उदाहरण)** (कोई अन्य उपयुक्त त्योहार)	**2** **1** **0.5** **0.5**

20.	"हमारा समुदाय हमें भाषा (मातृभाषा) और सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है जिनके माध्यम से हम विश्व को समझते हैं। यह हमारी स्वयं की पहचान को भी सहारा देता है। यह 'हम क्या हैं' इस भाव की द्योतक है, न कि 'हम क्या बन गए हैं'।" आप कैसे कह सकते हैं कि सामुदायिक पहचान पूरी तरह जन्म पर आधारित होती है?	**2**
Ans.	• सामुदायिक पहचान, जन्म पर आधारित होती है। • लोग उन समुदायों से संबंधित होकर अत्यंत सुरक्षित एवं संतुष्ट महसूस करते हैं जिनमें उनकी सदस्यता पूरी तरह जन्म पर आधारित होती है। (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	**1** **1**
21.	ब्रिटिश भारत की सरकार ने 1935 में जातियों और जनजातियों की 'अनुसूचियाँ' तैयार की थीं जिनमें उन जातियों तथा जनजातियों के नाम दिए गए थे जिन्हें उनके विरुद्ध बड़े पैमाने पर दिए जा रहे भेदभाव के कारण विशेष बर्ताव का पात्र माना गया था। स्वतंत्रता के बाद इस भेदभाव की भरपाई के लिए सरकार द्वारा की गई सबसे महत्त्वपूर्ण पहल क्या थी? इसके बारे में संक्षेप में लिखिए।	**2**
Ans.	• आरक्षण के अंतर्गत, सार्वजनिक जीवन के विभिन्न पक्षों में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के सदस्यों के लिए कुछ स्थान या सीटें अलग निर्धारित कर दी जाती हैं। इन आरक्षणों में अनेक किस्म के आरक्षण शामिल हैं जैसे, राज्य और केंद्रीय विधानमंडलों (यानी राज्य विधानसभाओं, लोकसभा और राज्यसभा) में सीटों का आरक्षण; सभी विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के अंतर्गत सरकारी सेवा में नौकरियों का आरक्षण; शैक्षिक संस्थाओं में सीटों का आरक्षण। **OR** • 93वाँ संशोधन उच्चतर शिक्षा की संस्थाओं में अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण लागू करने के लिए था, **OR** • अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनुच्छेद 17) कर दिया, **OR** • 1989 के अत्याचार निवारण अधिनियम। (कोई अन्य सरकारी पहल)	**2**
22.	(क) अल्पसंख्यक समूहों की धारणा में आमतौर से असुविधा या हानि का कुछ भाव निहित है। उदाहरण देते हुए इस कथन को स्पष्ट कीजिए।	**2**
Ans.	• अल्पसंख्यक वर्ग के सदस्य एक सामूहिकता का निर्माण करते हैं, यानी उनमें अपने समूह के प्रति एकात्मता, एकजुटता और उससे संबंधित होने का प्रबल भाव होता है। यह भाव हानि अथवा असुविधा से जुड़ा है, क्योंकि पूर्वाग्रह और भेदभाव का शिकार होने का अनुभव ही समूह के प्रति निष्ठा और दिलचस्पी की भावनाओं को बढ़ावा देते है। • उदाहरण के लिए, पारसियों या सिक्खों जैसे धार्मिक अल्पसंख्यक वर्ग आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत संपन्न हो सकते हैं लेकिन वे फिर भी सांस्कृतिक अर्थ में सुविधा वंचित हो सकते हैं क्योंकि हिन्दुओं की विशाल जनसंख्या की तुलना में उनकी संख्या कम है। (कोई अन्य उपयुक्त उदाहरण)	**1** **1**

Ans.	**अथवा** (ख) पश्चिमी और भारतीय दोनों संदर्भों में धर्मनिरपेक्षता के अर्थ पर प्रकाश डालिए। **पाश्चात्य संदर्भ:** चर्च और राज्य की पृथकता का द्योतक है। यह पृथक्करण धर्मनिरपेक्षीकरण या जनजीवन से धर्म के उत्तरोत्तर पीछे हटते जाने की प्रक्रिया से संबंधित है। **भारतीय संदर्भ:** भारतीय अर्थों में धर्मनिरपेक्ष और धर्मनिरपेक्षता उनके पश्चिमी भावार्थ तो शामिल हैं ही, पर उन में कुछ और भाव भी जुड़े हैं। एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति या राज्य वह होता है जो किसी विशेष धर्म का अन्य धर्मों की तुलना में पक्ष नहीं लेता।	2 1 1
23. Ans.	"एक ऐसे देश में जहाँ 5-14 आयु वर्ग के आधे बच्चे स्कूल के बाहर हों, वहाँ विकलांगताग्रस्त बच्चों के लिए स्थान कैसे हो सकता है, विशेष रूप से उस स्थिति में जबकि उनके लिए शिक्षा की अलग व्यवस्था करने का समर्थन किया जा रहा हो?" दो तरीके बताइए जिनसे एक विकलांग बच्चा स्वायत्तता प्राप्त कर सकता है। • समावेशी शिक्षा • वोकेशनल/कौशल शिक्षा बच्चे की बुनियादी ज़िंदगी की गुणवत्ता को सुधार देगी। (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	2 1 1
24. Ans.	"भारत में 90% से अधिक कार्य चाहे वह कृषि, उद्योग अथवा नौकरी (सेवाएँ) हो, असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र में आते हैं।" संगठित क्षेत्र के इतना छोटा होने का सामाजिक आशय क्या है? • बहुत कम लोग बड़ी फर्मों में रोज़गार करते हैं जहाँ कि वे दूसरे क्षेत्रों और पृष्भूमि वाले लोगों से मिल पाते हैं। • बहुत ही कम सुरक्षित और लाभदायक नौकरियों में प्रवेश करते हैं। • अनौपचारिक एवं असंगठित क्षेत्र के कर्मी एकत्रित होकर सामूहिक रूप से अपने उपयुक्त वेतन और सुरक्षित कार्यावस्था के लिए लड़ने का अनुभव नहीं रखते। • नियोजक अथवा ठेकेदार की मनमर्जी ही प्रभावी होती है। • कार्य के निश्चित नियम नहीं होते हैं। • नियुक्ति अधिक पारदर्शी नहीं होती है। • शिकायत और क्षतिपूर्ति की निश्चित कार्यविधियाँ नहीं होती हैं। • उपयुक्त वेतन और सुरक्षित कार्यावस्था नहीं हैं। (कोई दो)	2 (1+1)
25. Ans.	'हमारे सामयिक (वर्तमान) सूचना युग में विश्व भर के सामाजिक आंदोलन विशाल क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संजाल में एकजुट होने में सक्षम हैं।" कथन के समर्थन में उपयुक्त उदाहरण दीजिए। • गैर सरकारी संगठनों, धार्मिक तथा मानवतावादी समूहों, मानवाधिकार समितियों, उपभोक्ता संरक्षण अधिवक्ताओं पर्यावरण आंदोलनकारियों तथा जनहित में अभियान करने वाले अन्य लोग जो एक विशाल क्षेत्रीय तथा अंतराष्ट्रीय संजाल में एकजुट होने में सक्षम हैं • उदाहरण के लिए सिएटल में विश्व व्यापार संगठन के विरुद्ध हुए विशाल विरोध का संगठन, पाक्षिक रूप से इंटरनेट-आधारित संजाल द्वारा किया गया था। (कोई अन्य उपयुक्त उदाहरण)	2 1 1

	खण्ड ग	
26.	"कृषि के भूमंडलीकरण की प्रक्रिया अथवा कृषि को विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सम्मिलित किए जाने के संकेत हैं- वह प्रक्रिया जिसका किसानों और ग्रामीण समाज पर सीधा प्रभाव पड़ा है।" वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में 'अनुबंध खेती' की भूमिका पर चर्चा कीजिए।	**4**
Ans.	• पंजाब और कर्नाटक जैसे कुछ क्षेत्रों में किसानों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों (जैसे पेप्सी, कोक) से कुछ निश्चित फसलें (जैसे टमाटर और आलू) उगाने की संविदा दी गई है, जिन्हें ये कंपनियाँ उनसे प्रसंस्करण अथवा निर्यात हेतु खरीद लेती हैं। • 'संविदा खेती' पद्धति में, कंपनियाँ उगाई जाने वाली फसलों की पहचान करती हैं, बीज तथा अन्य वस्तुएँ निवेशों के रूप में उपलब्ध करवाती हैं, साथ ही जानकारी तथा अक्सर कार्यकारी पूंजी भी देती है, बदले में किसान बाज़ार की ओर से आश्वस्त रहता है। • 'संविदा खेती' मलूरूप से अभिजात मदों का उत्पादन करती है जो कि पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित नहीं होती। जैसे फूल (कट फ्लावर), अंगूर, अंजीर तथा अनार जैसे फल, कपास तथा तिलहन के लिए आजकल बहुत सामान्य है। कृषि भूमि का प्रयोग खाद्यान्न उत्पादन से हटकर किया जाता है। • 'संविदा खेती' किसानों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है वहीं यह किसानों के लिए अधिक असुरक्षा भी बन जाती है, क्योंकि वे अपने जीवन व्यापार के लिए इन कंपनियों पर निर्भर हो जाते हैं। • 'संविदा खेती' का समाजशास्त्रीय महत्त्व यह है कि यह बहुत से व्यक्तियों को उत्पादन प्रक्रिया से अलग कर देती है, तथा उनके अपने देशीय कृषि ज्ञान को निरर्थक बना देती है। (कोई चार)	(1+1+1+1)
27.	"स्वतंत्रता के बाद के भारतीय राज्य ने स्वतंत्रता-पूर्व काल के विरोधाभासों को विरासत में प्राप्त किया और उन्हें प्रतिबिंबित किया।" सार्वजनिक क्षेत्र में जाति की भूमिका के संबंध में दिए गए कथन पर टिप्पणी कीजिए।	**4**
Ans.	• राज्य जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध था और भारत के संविधान में भी स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख किया गया। दूसरी ओर, राज्य उन आमूलचूल सुधारों को लाने में असमर्थ एवं अनिच्छुक था जो जातीय असमानता के लिए आर्थिक आधार को दुर्बल बना देते।	**1**
	• राज्य ने यह माना कि यदि वह जाति प्रथा की ओर आँखें बंद करके काम करेगा तो उससे स्वतः ही जाति आधारित विशेषाधिकार कमज़ोर पड़ जाएँगे और अंततोगत्वा इस संस्था का उन्मूलन हो जाएगा।	**1**
	• लोकतांत्रिक राजनीति गहनता से जाति आधारित रही है। जाति चुनावी राजनीति का केंद्र-बिंदु बनी हुई है।	**1**
	• राज्य के विकास संबंधी कार्य कलाप और निजी उद्योग की संवृद्धि ने भी आर्थिक परिवर्तन में तीव्रता और गहनता लाकर अप्रत्यक्ष रूप से जाति संस्था को प्रभावित किया। आधुनिक उद्योग ने सभी प्रकार के नए-नए रोज़गार के अवसर तैयार किए जिनके लिए कोई जातीय नियम नहीं थे।	**1**

28.	"भारतीय राष्ट्रवाद में प्रभावशाली प्रवृत्ति समावेशात्मक और लोकतंत्रात्मक दृष्टि द्वारा चिह्नित रही।" स्पष्ट कीजिए।	**4**
Ans.	• समावेशात्मक इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें विविधता और बहुलता को मान्यता दी जाती रही है • लोकतंत्रात्मक इसलिए क्योंकि यह भेदभाव और अपवर्जन को नकारती है और एक न्यायपूर्ण एवं साम्यिक (उचित) समाज की स्थापना करती है। • मानवतावादी विचारों ने भारतीय राष्ट्रवादियों को प्रभावित किया, एक सबल, संयुक्त और लोकतंत्रात्मक राष्ट्र के लिए अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के महत्त्व को समझने में सक्षम बनाती है। • एक मज़बूत और लोकतंत्रात्मक राष्ट्र के लिए सभी समूहों और विशेष रूप से अल्पसंख्यक समूहों के अधिकारों को सुनिश्चत करने वाले संवैधानिक प्रावधानों की आवश्यकता होती है। (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	**1** **1** **1** **1**
29.	"भारत में किए जाने वाले कुछ अनुष्ठानों में प्रत्यक्ष रूप से पंथनिरपेक्षीकृत प्रभाव भी रहा है। वस्तुत: अनुष्ठानों के पंथनिरपेक्ष आयाम पंथनिरपेक्षता के लक्ष्यों से पृथक् होते हैं।" उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से औचित्य सिद्ध कीजिए।	**4**
Ans.	• इनसे पुरुषों और महिलाओं को अवसर मिलता है कि वो अपनी मित्रों से और अपनी उम्र से बड़े लोगों से भी घुलें-मिलें। • अपनी संपत्ति, कपड़े और जेवर पहनकर उनका प्रदर्शन करें। • पिछले कुछ दशकों से अनुष्ठानों के आर्थिक, राजनीतिक और प्रस्थिति आयामी पक्ष ज़्यादा उभर कर सामने आए हैं। • शादी-ब्याह के अवसर पर घर के बाहर लगी मोटर कार की कतार और अति महत्त्वपूर्ण व्यक्ति (वी.आई.पी.) के मेहमान बनकर आने, को उस परिवार की समृद्धि व विशेषता समझा जाता है। स्थानीय समुदाय में ऐसे परिवारों को ऊँची नज़र से देखा जाता है। (कोई अन्य उपयुक्त उदाहरण)	**1** **1** **1** **1**
30.	"जान ब्रेमन ने भूस्वामियों तथा कृषि मजदूरों के मध्य संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन की पहचान की।" जान ब्रेमन के द्वारा बताए गए वाक्यांश 'संरक्षण से शोषण तक' के अर्थ का उल्लेख कीजिए।	**4**
Ans.	• गहन कृषि के कारण कृषि मज़दूरों की बढ़ोतरी। यह बदलाव कुछ पूँजीवादी कृषि की ओर एक बदलाव के रूप में देखा जाता है। • कृषि के अधिक व्यापारीकरण के कारण ये ग्रामीण क्षेत्र भी विस्तृत अर्थव्यवस्था से जुड़ते जा रहे थे। • भुगतान में सामान (अनाज) के स्थान पर नगद भुगतान। • पारंपरिक बंधनों में शिथिलता अथवा भूस्वामी एवं किसान या कृषि मज़दूरों (जिन्हें बँधुआ मज़दूर भी कहते हैं) के मध्य पुश्तैनी संबंधों में कमी होना। • 'मुक्त' दिहाड़ी मज़दूरों के वर्ग का उदय। पूँजीवादी उत्पादन व्यवस्था, उत्पादन के साधन तथा मजदूरों के पथृक्कीकरण पर आधारित होता है। (कोई चार) (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	**(1+1+1+1)**

31.	(क) "ब्रिटिश साम्राज्य की अर्थव्यवस्था में नगरों की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।" उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से इस कथन को स्पष्ट कीजिए।	**4**
Ans.	• इन जगहों से उपभोग की आवश्यक वस्तुओं का निर्यात आसानी से किया जा सकता था। साथ ही, यहीं से उत्पादित वस्तुओं का सस्ती लागत से आयात किया जा सकता था। • औपनिवेशिक नगर ब्रिटेन में स्थित आर्थिक केंद्र और औपनिवेशिक भारत में स्थित हाशिये के बीच महत्वपूर्ण संपर्क सूत्र थे। इस प्रकार ये नगर भूमंडलीय पूँजीवाद के ठोस उदाहरण थे। • उदाहरण के रूप में औपनिवेशिक भारत में, बंबई को इस प्रकार सुनियोजित ढंग से विकसित किया गया था कि सन् 1900 तक भारत की एक तिहाई कच्ची कपास को जहाज़ से भेजा जा चुका था। • कोलकाता से जूट (पटसन) का निर्यात होता था जबकि चेन्नई से कहवा, चीनी, नील और कपास ब्रिटेन को निर्यात किया जाता था।	**1** **1** **1** **1**
	अथवा	
Ans.	(ख) "औपनिवेशिक देश में चलाए गए नियम कानून अलग हो सकते हैं और यह ज़रूरी नहीं है कि ब्रिटिश उन प्रजातांत्रिक नियमों का निर्वाह औपनिवेशिक देश में भी करें जो ब्रिटेन में लागू होते थे।" औपनिवेशिक कानून किस प्रकार चाय उद्योग के मालिकों और प्रबंधकों के पक्ष में थे? • औपनिवेशिक सरकार गलत तरीकों से मज़दूरों की भर्ती करती थी और उनसे बलपूर्वक काम लिया जाता था। • ब्रिटिश व्यवसायियों के लिए सरकारी बल का प्रयोग कर बागानों में मज़दूरों से सस्ते में काम कराया जाता था। औपनिवेशिक प्रशासक यह मानकर चलते थे कि बागान वालों को फ़ायदा पहुँचाने के लिए मज़दूरों पर कड़े से कड़ा बल प्रयोग किया जाए। • बड़ी संख्या में श्रमिकों को दूसरे प्रांतों से लाया गया था। लेकिन दूरदराज से हज़ारों मज़दूरों को लाकर ऐसे जगह पर रखने में जहाँ की आबोहवा स्वास्थ्य के प्रति कूल थी, यहाँ तक कि विचित्र प्रकार के बुखारों का प्रकोप था, इलाज में अत्यधिक खर्चा होता था और इस खर्चे के लिए बागानों के मालिक और ठेकेदार सहमत नहीं थे। • सही तरीके से मज़दूरों को लाना खर्चीला होता इसलिए ब्रिटिश व्यावसायिकों ने सरकारी ताकत का सहारा लिया। ऐसे कानून बनाए गए कि गरीब मज़दूरों के पास कोई विकल्प नहीं बचा।	**4** **1** **1** **1** **1**
32.	"जनजातीय इलाके देश के खनिज-संपन्न और वनाच्छादित भागों में स्थित थे, इसलिए जनजातीय लोगों को शेष भारतीय समाज के विकास के लिए अनुपात से बहुत अधिक कीमत चुकानी पड़ी।" स्वतंत्रता के बाद भारत की जनजातीय जनसंख्या के लिए राष्ट्रीय विकास किस प्रकार एक चुनौती रहा है?	**4**
Ans.	• राष्ट्रीय विकास के नाम पर, बड़े-बड़े बाँध बनाए गए, कारखाने स्थापित किए गए और खानों की खदुाई शुरू की गई। इस प्रकार के विकास से जनजातियों की हानि की कीमत पर मुख्यधारा के लोग लाभान्वित हुए। • खनिजों के दोहन और जल विद्युत सयंत्रों की स्थापना के लिए उपयुक्त स्थलों के उपयोग, जिनमें से अनेक स्थल जनजातीय इलाकों में स्थित थे, का एक आवश्यक उप-उत्पाद यह था कि जनजातीय लोगों से उनकी ज़मीनें छिनने की प्रक्रिया शुरू हो गई।	**1** **1**

	• ज़मीनों पर निजी मालिकाना हक (स्वामित्व) दिए जाने से भी जनजातीय लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा क्योंकि उनके यहाँ समुदाय आधारित सामूहिक स्वामित्व की प्रथा थी और उसके स्थान पर नयी व्यवस्था लागू किए जाने से उन्हें हानि उठानी पड़ी, और लाभ असंगत-अनुपात में विभिन्न समदुायों और क्षेत्रों को मिल रहे हैं। • जनजातीय लोगों की घनी आबादी वाले अनेक क्षेत्रों और राज्यों को विकास के दबाव के कारण गैर–जनजातीय लोगों के भारी संख्या में अप्रवास (आकर बसने) की समस्या से भी जूझना पड़ रहा है इससे जनजातीय समदुायों के छिन्न –भिन्न होने और दूसरी संस्कृतियों के हावी हो जाने का खतरा पैदा हो गया है। (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	**1** **1**
33.1 **Ans.**	(क) सामाजिक कारणों के लिए ग्रामीण-शहरी प्रवसन को प्राथमिकता दी जाती है। कोई भी दो कारण बताइए। • सामाजिक रूप से पीड़ित समूहों को शहरी रहन-सहन कुछ हद तक रोज़मर्रा की उस अपमानजनक स्थिति से बचाता है जो उन्हें गाँवों में भुगतनी पड़ती है जहाँ हर कोई उनकी जाति से उन्हें पहचानता है। • शहरी जीवन की गुमनामी के कारण सामाजिक दृष्टि से प्रभुत्वशाली ग्रामीण समूहों के अपेक्षाकृत गरीब लोग शहर में जाकर कोई भी नीचा समझा जाने वाले काम करने से नहीं हिचकिचाते जिसे वे गाँव में रहते हुए बदनामी के डर से नहीं कर सकते थे। • संसाधन निजी संपत्ति के रूप में बदल गए हैं अथवा खत्म हो गए हैं। जैसे - तालाब-पोखर, जंगल। • नकद आमदनी कमाने के अवसर गाँवां में कम हो गए हैं। (कोई दो) (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	**2** **(1+1)**
33. 2 **Ans.**	(ख) कृषि-आधारित ग्रामीण जीवन-शैली में गिरावट के कारणों को उजागर कीजिए। • कृषि देश में सबसे अधिक योगदान देती थी लेकिन आज सकल घरेलू उत्पाद में उसका योगदान केवल छठवाँ भाग रह गया है। उसका आपेक्षिक आर्थिक मूल्य अत्यधिक घट गया है। यहाँ तक की गाँवों में रहने वाले अधिक से अधिक लोग अब शायद खेती या यहाँ तक की गाँव में काम नहीं करते हैं। • ग्रामीण लोग परिवहन सेवा, व्यवसाय या शिल्प-निर्माण जैसे खेती से अलग भिन्न ग्रामीण व्यवसायों को अधिकाधिक अपनाते जा रहे हैं। • रेडियो, टेलीविजन, समाचारपत्र जैसे जनसंपर्क एवं जनसंचार के साधन अब ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के समक्ष नगरीय जीवनशैली और उपभोग के स्वरूपों की तस्वीरें पेश कर रहे हैं। • जनसंक्रमण और जनसंचार के साधन अब ग्रामीण तथा नगरीय इलाकों के बीच की खाई को पाटते जा रहे हैं। • गाँवों में तालाबों, वन प्रदेशों और गोचर भूमियों जैसे साझी संपत्ति के संसाधनों में बराबर कमी आती जा रही है। • पहले साझे संसाधनों से गरीब लोग गाँवों में गुज़ारा कर लिया करते थे हालाँकि, उनके पास ज़मीन बहुत कम या बिल्कुल नहीं हुआ करती थी। अब ये संसाधन निजी संपत्ति के रूप में बदल गए हैं अथवा खत्म हो गए हैं। • कठिनाई की यह हालत इस तथ्य से और भी खराब हो जाती है कि नकद आमदनी कमाने के अवसर गाँवों में कम हो गए हैं (कोई चार)	**4** **(1+1+1+1)**

34. **Ans.**	'घरों पर किया जाने वाला काम आर्थिकी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।' किसी एक 'गृह-आधारित' उद्योग की कार्यप्रणाली पर विस्तार से प्रकाश डालिए। • घरों पर किये जाने वाले काम के अंतर्गत लेस बनाना, ज़री या ब्रोकेड का काम, गलीचों, बीड़ियों, अगरबत्तियों और एसे ही अन्य उत्पादों को बनाया जाता है। • ये कार्य मुख्य रूप से महिलाओं या बच्चों द्वारा किए जाते हैं। • एक एजेंट (प्रतिनिधि) इन्हें कच्चा माल दे जाता है और संपर्णू कार्य को ले भी जाता है। • घर पर कार्य करने वालों को चीज़ों के नग (पीस) के हिसाब से पैसे दिए जाते हैं, जो इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हाने कितने नग (पीस) बनाए हैं। • बीड़ी बनाने की प्रक्रिया जंगल के पास वाले गाँवों से शुरू होती है। वहाँ गाँव वाले तेंदु पत्ते तोड़कर जंगलात विभाग या निजी ठेकेदार को बेच देते हैं जो कि इसे वापस जंगलात विभाग को बेच देता है। • औसतन एक आदमी दिन भर में 100 बंडल (हरेक में 50 पत्ते होते हैं) इकट्ठे कर सकता है। • सरकार बीड़ी कारखानों के मालिकों को ये पत्ते नीलाम कर देती है, जो वे ठेकेदारों को दे देते हैं। ठेकेदार इनमें तंबाकू भरने के लिए वापस घर पर काम करने वालों को दे देता है। • ये अधिकांशतः महिलाएँ होती हैं, ये पहले पत्तों को गीला करके गोलाकार कर देती हैं, फिर उसे काटती हैं, फिर तंबाकू भरकर उसे बाँध देती हैं। • ठेकेदार बीड़ियों को वहाँ से लेकर उसे उत्पादक को बेच देता है, जो इन्हें पकाता या सेकता है और अपने ब्रांड का लेबल लगा देता है। • उत्पादक इन्हें बीड़ियों के वितरक को बेच देता है, जो उन्हें थोक विक्रेताओं को देता है और फिर यह आप के पड़ोस वाली पान की दुकान पर बेच दी जाती है। (कोई अन्य उपयुक्त उदाहरण)	**6** **(1+1+1+1+1+1)**
35. **Ans.**	इतिहास में महिला आंदोलन किस प्रकार विकसित हुए हैं? • 20वीं सदी के प्रारंभ में राष्ट्रीय तथा स्थानीय स्तर पर महिलाओं के संगठनों में वृद्धि देखी गई। विमेंस इंडिया एसोसिएशन (भारतीय महिला एसोसिएशन; डबल्यू. आई.ए., 1971) आल-इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस (अखिल भारतीय महिला कॉन्फ्रेंस; ए.आई.डबल्यू.सी., 1926) और नेशलन काउंसिल फॅार विमेन इन इंडिया (भारत में महिलाओंकी राष्ट्रीय काऊंसिल; एन.सी.डबल्.यूआई.) ये ऐसे संगठनों के नाम हैं जिन्हें हम तुरंत पहचान कर बता सकते हैं। जबकि इनमें से कई की शुरुआत सीमित कार्य क्षेत्र से हुई, इन का कार्य क्षेत्र समय के साथ विस्तृत हुआ। • औपनिवेशिक काल में जनजातीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रारंभ होने वाले संघर्षों तथा क्रांतियों में महिलाओं ने पुरुषों के साथ भाग लिया। • यह तर्क दिया जा सकता है कि सक्रियता का यह काल सामाजिक आंदोलन नहीं था। इनमें संगठन, विचारधारा, नेतृत्व, एक साझी समझ तथा जन मुद्दों पर परिवर्तन लाने का लक्ष्य था। • 1970 के दशक के मध्य में भारत में महिला आंदोलन का नवीनीकरण हुआ। कुछ लोग इसे भारतीय महिला आंदोलन का दूसरा दौर कहते हैं। जबकि बहुत सी चिंताएँ उसी प्रकार बनी रहीं, फिर भी संगठनात्मक रणनीति तथा विचारधाराओं दोनों में परिवर्तन हुआ। स्वायत्त महिला आंदोलन कहे जाने वाले आंदोलनों में वृद्धि हुई।	**6**

	• संगठनात्मक परिवर्तन के अलावा कुछ नए मुद्दे भी थे जिन पर ध्यान दिया गया । उदाहरण के लिए, महिलाओं के प्रति हिंसा के बारे में वर्षों से अनेक अभियान चलाए गए हैं आपने देखा होगा कि स्कूल के प्रार्थनापत्र में पिता तथा माता दोनों के नाम होते हैं • महिलाओं के आंदोलनों के कारण महत्वपूर्ण कानूनी परिवर्तन आए हैं। भू-स्वामित्व व रोज़गार के मुद्दों की लड़ाई यौन-उत्पीड़न तथा दहेज के विरुद्ध अधिकारों की माँग के साथ लड़ी गई है। • बंगाल में राजाराममोहन राय ने सती-विरोधी अभियान का नेतृत्व किया; बाम्बे प्रेसिडेंसी में वहाँ के अग्रणी सुधारक रानाडे ने विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए आंदोलन चलाया; जोतिबा फुले ने एक साथ जातीय और लैंगिक अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई। (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु/ उदाहरण)	**(1+1+1+1+1+1)**
	-o O o-	